उपसंहार

उपसंहार

शंकर पुणतांबेकर मूलत: व्यंग्य लेखक हैं। इन्होंने उपन्यास, नाटक, एकांकी एवं निबंध के माध्यम से हिंदी व्यंग्य साहित्य को समृद्ध किया है। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने राजनीति की विकृतियों एवं समाज जीवन में व्याप्त भ्रष्टाचार के विविध रूपों पर व्यंग्य किया है। हास्य-व्यंग्य एकांकीकार के रूप में हिंदी साहित्य में उनकी अलग पहचान है। शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य हास्य-व्यंग्य एकांकियों का अध्ययन करने के उपरांत निष्कर्ष रूप में जो महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त हुए हैं वे समन्वित रूप में प्रस्तुत किए हैं -

प्रथम अध्याय है - ''शंकर पुणतांबेकर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व''। शंकर पुणतांबेकर के व्यक्तित्व और कृतित्व का अध्ययन करने के बाद यह निष्कर्ष सामने आते हैं कि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से अमानवीय मूल्यों पर प्रखर व्यंग्य किया है। अपने बचपन से ही वे देश के प्रति एवं उसके समस्याओं के प्रति परिचित होते गए। उनका बचपन देहात में बितने के कारण देहात के लोगों की समस्याएँ उन्होंने स्वयं अनुभव की।

पुणतांबेकर एक आदर्श व्यक्तिमत्व है, जो सदा ही अपने संपर्क में आनेवाले को एक दीप-स्तंभ साबित हुआ है। एक व्यक्ति के रूप में इन्होंने अपनी भूमिका सफलता से निभाई है। अपने व्यवहार से मित्र-परिवार में प्रिय रहे हैं। जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए हमेशा तत्पर रहे हैं। आज भी 79-80 की उम्र में कुछ और लिखने की उनकी इच्छाशक्ति निश्चित ही सराहनीय है।

आम आदमी के जीवन की समस्याओं को इन्होंने सदा ही अपने व्यंग्य के माध्यम से उद्घाटित किया है। इनका व्यंग्य सीधा प्रहार करता है। व्यक्ति को सोचने पर मजबूर कर देता है। उनकी प्राथमिक साहित्य-रचनाएँ इतने प्रगल्भ विचारों से युक्त न हो कर भी कुछ मात्रा में समस्याओं, विसंगतियों के प्रति हमें जागृत करने का कार्य अवश्य करती हैं। इनकी व्यंग्य रचनाएँ विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालती हैं। प्रेम, धर्म, समाज, राजनीति, पूँजीवाद, विवाह, संस्कृति आदि विषयों को इन्होंने अपने व्यंग्य का निशाना बनाया है। इनकी व्यंग्य रचनाएँ पाठकों को विसंगतियों पर विचार करने के लिए विवश कर देती हैं। इन्होंने सामाजिक, राजनीतिक आदि विभिन्न विषयों पर व्यंग्य कर के अपनी गहन अध्ययनशीलता तथा एक जागरूक लेखक का उदाहरण सामने रखा है। अत: हम कह सकते हैं कि व्यंग्यकार पुणतांबेकर

का साहित्य समाज की विसंगतियों पर एक तीखा व्यंग्य है, जो समाज परिवर्तन में उपयोगी सिद्ध होगा।

हिंदी अध्यापक एवं विभागाध्यक्ष के रूप में सेवारत रहते हुए पुणतांबेकर ने साहित्य सृजन का भी कार्य किया। हिंदी व्यंग्य साहित्य को उन्होंने समृद्ध किया है। हिंदी भाषी प्रदेश के लेखक एवं आलोचक भी उनके लेखन से प्रभावित रहे। अत: वे नई दिल्ली, मध्य प्रदेश, हैदराबाद की संस्थाओं से सम्मानित हुए हैं। रामदेव शुक्ल, यशवंत व्यास, महावीर अग्रवाल, डॉ. नंदलाल कल्ला, डॉ. विनोद शंकर शुक्ल, डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी आदि ख्यातकीर्त साहित्यिकों ने पुणतांबेकर के साहित्य का गौरव किया है। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य साहित्य को समृद्ध करनेवाले शंकर पुणतांबेकर एक सिद्ध हस्त व्यंग्यकार हैं। 'व्यंग्य अमरकोश' नामक कोश की रचना के कारण वे हिंदी साहित्याकाश में सदैव अमर ही रहेंगे।

द्वितीय अध्याय है - ''हास्य-व्यंग्य का स्वरूप-विवेचन एवं विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का स्वरूप''। हास्य-व्यंग्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए कहा जा सकता है कि हास्य और व्यंग्य यह दो अलग संकल्पनाएँ हैं। इन दोनों के मिश्रण से हास्य-व्यंग्य की रचना की जा सकती है। हास्य और व्यंग्य की अनेक विद्वानों ने अपनी दृष्टि से परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं तथा उसके विभिन्न प्रकार भी बताए हैं। जिससे हास्य और व्यंग्य का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' में संग्रहित एकांकियों के द्वारा सामाजिक, राजनीतिक, कौटुंबिक आदि विभिन्न विषयों को लेकर एकांकी लिखे गए हैं। इन एकांकियों में व्यंग्यकार पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से समाज की विकृतियों तथा विसंगतियों को सामने रखा है। कुछ एकांकी अधिक हास्यात्मक तो कुछ अधिक व्यंग्यात्मक बन गए हैं। इसमें शिष्ट हास्य और संयत व्यंग्य की अभिव्यक्ति हुई है। पुणतांबेकर के व्यंग्य में गंभीरता दिखाई देती है। उनकी मान्यता है कि व्यंग्य के लिए विशिष्ट लेखन शैली महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से उनके विवेच्य एकांकियों में विशिष्ट कथन भंगिमा के कारण हास्य-व्यंग्य का प्रभाव दिखाई देता है।

विवेच्य एकांकी संग्रह के 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' शीर्षक एकांकी में खासा व्यंग्य है। इसमें संकलन-त्रय का अभाव होते हुए भी चिकित्सा क्षेत्र पर प्रकाश डालने

में यह सक्षम है। महाविद्यालय के रंगमंच पर आज भी यह एकांकी खेला जा सकता है। स्नेह-संमेलन एवं हिंदी-दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रमों में प्रदर्शित करने लायक एकांकियों के अभावपूर्ति का कार्य पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों से हो सकता है। विवेच्य एकांकियों में पुणतांबेकर समाज में स्थित बुराई पर चोट करते हैं, समाज में सुधार लाने की कोशिश करते हैं। इससे उनका समाज हित का दृष्टिकोण स्पष्ट होता है।

तृतीय अध्याय है - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों का कथ्य एवं शिल्प''। व्यंग्यकार पुणतांबेकर ने विवेच्य एकांकी संग्रह की एकांकियों में समाज में स्थित व्यंग्य को दिखाया है। डॉक्टरों की पूँजीवादी वृत्ति का उद्घाटन, युवतियों में अतिआधुनिकता का आकर्षण, चुनाव व्यवस्था का खोखलापन, छात्रावास में रहनेवाले छात्रों की स्वच्छंद मनोवृत्ति, नहाने की आवश्यकता पर प्रश्नचिह्न, नेताओं का ढोंग आदि विषयों के साथ-साथ कुछ हलके-फुलके घरेलु विषयों को लेखक ने हास्य-व्यंग्य शैली में उजागर किया है।

शिल्प की दृष्टि से विवेच्य एकांकी पूरी तरह से सफल तो नहीं बन पड़ा है, लेकिन इसे असफल भी नहीं कहा जा सकता। सभी एकांकी थोड़े-बहुत व्यंग्य से युक्त है। यह व्यंग्य सामाजिक, राजकीय क्षेत्र, शैक्षिक व्यवस्था और अन्य छोटे-मोटे विषयों को लेकर किया गया है। इसमें कहीं-कहीं वक्रोक्ति का तो कहीं बहुत ही कम मात्रा में उपमा अलंकार का प्रयोग दिखाई देता है। व्यंग्यप्रधान एकांकियों की शुरुआत में रंगमंचीय निर्देश दिए गए हैं। अभिनय संबंधी भी निर्देश दिखाई देते हैं। इसमें 'बचाओ, मुझे डाक्टरों से बचाओ' में व्यंग्य उत्कृष्ट बन पड़ा है परंतु इस एकांकी में संकलन-त्रय का ध्यान नहीं रखा गया है। एक सुयोग्य निर्देशक के निर्देशन में इन एकांकियों का सफलता से मंचन किया जा सकता है। इस दृष्टि से 'इन्टरव्यू की तैयारी', 'अनोखेलाल को ऑफिस का चार्ज', 'चूहें', 'रंग में भंग' जैसी एकांकियों में भी अच्छा खासा व्यंग्य बन पड़ा है। इसमें व्यंग्य उत्कृष्ट रूप में विद्यमान है और यह एकांकी मंच पर भी अपेक्षित प्रभाव छोड़ती है। कॉलेज के स्तर पर मंचीत करने के लिए यह एकांकी बिल्कुल फिट है। संक्षेप में विषय की विसंगती को पाठकों के सामने ना केवल रखा गया है, तो उन्हें सोचने पर विवश किया है। पाठकों का ध्यान अनायास ही इस विसंगती की ओर आकृष्ट हो जाता है।

समस्त एकांकियों का एक मात्र उद्देश्य विसंगती को सामने लाना है। उद्देश्य की दृष्टि से विवेच्य एकांकी सफल रहे हैं। कथ्य का निर्वाह इन एकांकियों में पूर्ण रूप से हुआ है। कथ्य और शिल्प के प्रयोग से उत्कृष्ट साहित्य निर्माण होता है। प्रस्तुत एकांकी संग्रह में भी कथ्य के साथ शिल्प का जिस प्रकार प्रयोग किया गया है, वह एकांकियों के उद्देश्य का सफलता से वहन करता है । उनमें शिल्प के विविध प्रयोग आवश्यक नहीं लगते। इन एकांकियों के निर्माण का उद्देश्य विसंगतियों पर व्यंग्य कर समाज को उस पर विचार करने के लिए प्रवृत्त करना मात्र है और इस उद्देश्य को प्रस्तुत करने में विवेच्य एकांकी सफल रहे हैं।

चतुर्थ अध्याय है - ''शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य का मूल्यांकन'' । विवेच्य एकांकियों का मूल्यांकन करने के उपरांत यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शंकर पुणतांबेकर अपने युग के प्रति सजग है। समाज में व्याप्त असंगति, विवशताओं से वे भली-भाँति परिचित हैं। राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र से जुड़ा हास्य-व्यंग्य समाज के भ्रष्टाचारी, पूँजीवादी लोगों को शोषक के रूप में तथा समाज को शोषित के रूप में प्रस्तुत करता है। इस पर किए गए हास्य-व्यंग्य ने इन नेताओं, व्यापारियों, भ्रष्टाचारियों की पोल खोलने का कार्य किया है। समाज में व्याप्त अनीति अमानवीय मूल्यों का पुणतांबेकर ने हास्य-व्यंग्य के माध्यम से विरोध किया है। इस राजनीतिक तथा प्रशासनिक क्षेत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार और नेतागिरी के आडंबर को सब के सामने प्रस्तुत करने का कार्य उनके व्यंग्य एकांकी साहित्य ने किया है।

सामाजिक क्षेत्र से जुड़े एकांकियों का हास्य-व्यंग्य सामाजिक प्रश्नों से जुड़ा है। स्वास्थ्य विभाग की धाँधलियाँ, कमजोर कानून व्यवस्था, पुलिस की असमर्थता, शिक्षा जगत की त्रासदी आदि विभिन्न बातों को हास्य-व्यंग्य के माध्यम से पुणतांबेकर ने प्रस्तुत किया है। इससे उनकी समाज के प्रति जागरूक दृष्टि का परिचय मिलता है। उन्होंने हास्य-व्यंग्य के प्रयोग से सामाजिक विसंगति, विवशताओं को पाठकों के सम्मुख रखा है। पुणतांबेकर ने केवल राजनीतिक, प्रशासनिक, सामाजिक विषयों पर ही हास्य-व्यंग्य नहीं किया है तो पारिवारिक समस्याओं, विसंगतियों को भी अपने हास्य-व्यंग्य का विषय बनाया है। व्यक्ति रोजमर्रा की जिंदगी में छोटी-मोटी बातों को लेकर आपसी झगड़े शुरू कर देता है, पुणतांबेकर उनकी इस आदत पर चोट करते हैं। एकांकियों में चित्रित 'अनोखेलाल' नामक पात्र एक मध्यवर्गीय मनुष्य का प्रतिनिधित्व करता है। उसकी तमाम मूर्खताओं, अभावग्रस्त जीवन तथा

उससे उत्पन्न समस्याएँ एक मध्यवर्गीय मनुष्य की समस्याएँ हैं। पुणतांबेकर के इन समस्त एकांकियों में व्यक्ति से लेकर शासन तक सभी की असमर्थता, कमजोरियाँ, विसंगति आदि बातों को उजागर करने में हास्य-व्यंग्य ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अभिनय संकेत, रंग संकेत अपेक्षा से कम होकर भी सुयोग्य निर्देशन से विवेच्य एकांकियाँ मंचन के लिए सर्वथा उपयुक्त सिद्ध हो सकती हैं।

पंचम अध्याय है -''हास्य-व्यंग्य एकांकियों में शंकर पुणतांबेका का योगदान''। शंकर पुणतांबेकर के समकालीन एकांकीकारों ने ज्यादा तौर पर समाज सुधार, नैतिकता, उपदेशात्मकता आदि बातों को एकांकी का विषय बनाया है। समाज में फैल रहे अनाचार, अनैतिकता पर एकांकीकारों ने अपने एकांकियों के माध्यम से आवाज उठाई है। जातियता, सांप्रदायिक भावना सामाजिक तथा वैयक्तिक समस्याओं को कुछ एकांकीकारों ने उजागर किया है तो कहीं पर राजनीतिक नेताओं, सत्ताधारी लोग, धर्म के ठेकेदारों जैसे शोषक वर्ग पर व्यंग्य भी किया गया है।

रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ 'अश्क' जैसे एकांकीकारों ने हिंदी व्यंग्य एकांकी में प्रत्यक्ष योगदान दिया है। हरिशंकर परसाई तथा श्रीलाल शुक्ल दोनों श्रेष्ठ व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं लेकिन उन्होंने एकांकी साहित्य नहीं लिखा है। हरिशंकर परसाई के 'रानी नागफणी की कहानी' और श्रीलाल शुक्ल के 'राग दरबारी'का किया गया नाट्य-रूपांतर उल्लेखनीय है। नाट्य-रूपांतर करने जैसे उत्कृष्ट साहित्य की रचना कर इन दोनों ने भी अपना अप्रत्यक्ष रूप से परंतु महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। गिरीश रास्तोगी ने 'राग दरबारी' का नाट्य-रूपांतर कर अपना योगदान दिया है।

उपर्युक्त सभी रचनाकारों के कारण ही हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकी साहित्य समृद्ध बन रहा है। रामकुमार वर्मा, मोहन राकेश, उपेंद्रनाथ अश्क आदि ने समस्याप्रधान एकांकियों की रचना की है जिसमें व्यंग्य की झलक दिखाई देती है। हरिशंकर परसाई, श्रीलाल शुक्ल, गिरीश रास्तोगी ने अपना अप्रत्यक्ष योगदान दिया है। इन सभी के एकांकी, नाटक की गंभीर वातावरण में निर्मिति हुई है। शंकर पुणतांबेकर ने गंभीर विषयों को भी हास्य-व्यंग्य मिश्रित वातावरण में सरलता से समस्या को पाठकों तक पहुँचाया है। मंचन के योग्य, तथा हास्य-व्यंग्य के द्वारा लोगों को समस्या पर विचार करने को प्रवृत्त करनेवाली एकांकियों की

रचना कर इन्होंने हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकी साहित्य-सृजन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। स्नेह-संमेलन, कॉलेज आदि में इनके एकांकी खेले जा सकते है। अत: हिंदी हास्य-व्यंग्य एकांकियों में शंकर पुणतांबेकर का योगदान उल्लेखनीय है।

❑ प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध की मौलिकता -

1. शंकर पुणतांबेकर के हास्य-व्यंग्य एकांकियों पर किया गया यह पहला अनुसंधान है। अब तक शंकर पुणतांबेकर के एकांकी साहित्य पर अनुसंधान नहीं हुआ है। अत: यह अनुसंधान उनके एकांकी साहित्य पर किया गया सब से पहला अनुसंधान है।
2. हास्य-व्यंग्य का सैद्धांतिक स्वरूप इस लघु शोध-प्रबंध में संक्षेप में स्पष्ट किया है।
3. एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के स्वरूप को भी इसमें स्पष्ट किया है।
4. एकांकियों पर हास्य-व्यंग्य के प्रभाव तथा हास्य-व्यंग्य के मूल्य को स्पष्ट किया है।
5. विवेच्य एकांकियों के कथ्य एवं शिल्प पर प्रकाश डाला है।
6. अन्य समकालीन एकांकीकारों और शंकर पुणतांबेकर के योगदान को स्पष्ट किया है।

शंकर पुणतांबेकर के एकांकियों पर पहला अनुसंधान और एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के किए गए विचार के कारण यह लघु शोध-प्रबंध महत्त्वपूर्ण है।

❑ प्रस्तुत शोध-कार्य की उपलब्धियाँ -

1. आदरणीय शंकर पुणतांबेकर तथा डॉ. सुरेश माहेश्वरी द्वारा प्राप्त पत्र इस लघु शोध-प्रबंध के परिशिष्ट में समाविष्ट किए गए हैं। इन पत्रों से पुणतांबेकर के जीवन तथा कृतित्व का परिचय मिलता है।
2. शंकर पुणतांबेकर के विवेच्य एकांकियों के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रुपताओं, समस्याओं पर व्यंग्य किया है ।
3. राजनीति, शिक्षा विभाग, कानून विभाग, स्वास्थ्य विभाग, संस्थाओं आदि क्षेत्रों में बढ़ रहे भ्रष्टाचार का पर्दाफाश किया है।
4. विवेच्य एकांकी संग्रह के राजनीतिक क्षेत्र से संबंधित एकांकी वर्तमान राजनीति तथा नेताओं की स्वार्थ वृत्ति का उद्घाटन करने में सफल रहे हैं।
5. विवेच्य एकांकियों के हास्य-व्यंग्य के योग्य मिश्रण से गंभीर विषयों को भी सहज रूप से पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है।

6. पुणतांबेकर के पारिवारिक एकांकी परिवार के प्रति उनकी पैनी दृष्टि के परिचायक हैं। विवेच्य एकांकियों में उक्त दृष्टि के दर्शन होते हैं।
7. विवेच्य एकांकियों के अध्ययन से शंकर पुणतांबेकर की समाज के प्रति सजग दृष्टि स्पष्ट हुई है।

❑ अध्ययन की नई दिशाएँ -

शंकर पुणतांबेकर एक अहिंदी भाषी हिंदी साहित्यकार हैं। वे एक एकांकीकार, नाटककार, उपन्यासकार, लघुकथाकार, निबंधकार तो हैं ही लेकिन उन्हें ज्यादा-तौर पर एक व्यंग्यकार के रूप में जाना जाता है। उन्होंने हर विधा प्रकार में अपनी व्यंग्य लेखनी चलाई है। उनकी हास्य-व्यंग्य एकांकियों पर प्रस्तुत किया गया यह पहला शोध-कार्य है। अन्य शोधार्थियों को शंकर पुणतांबेकर के साहित्य पर अनुसंधान करने के लिए कुछ नए विषयों का यहाँ संकेत दिया है -

1) ''हिंदीतर साहित्यकार : शंकर पुणतांबेकर''
2) ''शंकर पुणतांबेकर की लघुकथाएँ : एक अनुशीलन''
3) ''शंकर पुणतांबेकर के साहित्य में चित्रित राजनीतिक व्यंग्य''
4) ''हिंदी व्यंग्य साहित्य में शंकर पुणतांबेकर का योगदान''

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध मैंने अपनी सीमा में रहकर पूर्ण किया है। अत: उपर्युक्त विषयों को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है।

❑❑❑❑